Dr. Jaya
Deptt. of Sociology
B.A Part I (Hons.)
Date :- 29/05/2020 Paper – 2, Unit – 6
Lecture Series :- 56

Topic :- Marksist Theory of Economic Determinism

मार्क्स ने :-

4) आर्थिक कारक एवं राज्य (Economic Factors and State) – मार्क्स व एंगेल्स की तत्कालीन अर्थव्यवस्था के आधार पर ही अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। अपने आर्थिक सिद्धांतों की विवेचना के लिए मार्क्स ने उस समय के कुछ विचारों को मान्यता प्रदान की तो अनेक दूसरे

विचारों का पूर्णतापूर्वक खण्डन भी किया।
अतः मार्क्स ने राज्य की अनिवार्यता को स्वीकार करते हैं। किया है। इन्होंने बतलाया कि आधुनिक युग में कुछ प्रशासनिक कार्य ऐसे हैं जो प्रत्येक समाज के लिए अनिवार्य होते हैं। कोई भी व्यक्ति इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकता है कि औद्योगिक समाजों में प्रशासनिक संरचना के बिना कोई काम नहीं चल सकता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि औद्योगिक समाजों में ~~प्रशासनिक~~ भी एक विशेष प्रकार के केन्द्रीकृत प्रशासन का होना अनिवार्य है। केन्द्रीकृत प्रशासनिक संरचना समाज के आर्थिक विकास की योजनाओं के लिए भी आवश्यक है। मार्क्स का विचार है कि राज्य समाज के प्रशासनिक तथा दिशा-निर्देश देने वाले कार्यों का सम्मिलित रूप है अतः किसी भी समाज में राज्य को समाप्त नहीं किया जा सकता है। इसके बाद भी मार्क्स राज्य के वर्तमान रूप को एक बुराई के रूप में देखते हैं। यही कारण है कि सद्भावनापूर्ण समाजों में मार्क्स ने राज्य का लोप हो जाने से सम्बन्धित अपने जो विचार प्रस्तुत किये हैं, उनका अर्थ प्रतीकात्मक है। वास्तव में, मार्क्स यह नहीं मानते कि क्रांति के बाद बनने वाले साम्यवादी समाज में राज्य पूर्णतया समाप्त हो जायेगा बल्कि मार्क्स के अनुसार साम्यवादी समाज में राज्य तो रहेगा

Scanned by CamScanner

लेकिन वर्गों पर आधारित उसका चरित्र नष्ट हो जायेगा। यही राज्य के लुप्त हो जाने का प्रतीकात्मक अर्थ है।

मार्क्स के अनुसार राजनीतिक व्यवस्था तथा आर्थिक व्यवस्था के बीच आदान प्रदान का एक गहरा संबंध है। साम्यवादी समाजों में राजनीतिक व्यवस्था का स्वरूप आर्थिक व्यवस्था की ही तरह स्वायत्ततापूर्ण (Autonomous) होनी चाहिए। मार्क्स का विचार है कि जिस तरह उत्पादन और वितरण का एक पृथक संगठन होता है तथा जिस प्रकार उत्पादन की समस्याओं का निदान आर्थिक व्यवस्था में ही खोजा जाता है, उसी तरह राजनीतिक व्यवस्था को भी एक ऐसे तंत्र के रूप में होना चाहिए जिसके द्वारा जनसाधारण की समस्याओं की समस्याओं का समाधान किया जा सके। इसका तात्पर्य है कि राजनीतिक को सत्ता से पृथक करना आवश्यक है। राज्य की सत्ता का विरोध करते हुए मार्क्स ने लिखा है कि राज्य के लुप्त होने का अर्थ यह है कि राज्य का अस्तित्व केवल उत्पादन और वितरण के स्रोतों को खोजने तथा इनसे संबंधित समस्याओं का निदान करने तक ही सीमित होगा। इस प्रकार पूंजीवादी समाजों में राज्य की शक्ति को चुनौती देते हुए मार्क्स ने उन प्रयत्नों पर बल दिया जिनके द्वारा क्रांति के माध्यम से राज्य की परम्परागत सत्ता को नष्ट किया जा सके।